15 बाज़ लोग

अनामिका

(जन्म, सन् 1961)

समकालीन हिन्दी कवयित्री अनामिका का जन्म मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ। उनका बचपन घर में अकेले रहने के कारण पुस्तकालय और पुस्तकों के बीच बीता। उन्होंने स्थानीय स्कूल में प्रारंभिक शिक्षा तथा पटना विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। संप्रति वे सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में रीडर हैं। 'खुरदरी हथेलियाँ' , 'गलत पते की चिट्ठी', 'दूब-धान', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप', 'समय के शहर में', 'कविता में औरत' आदि इनके प्रसिद्ध कविता संग्रह हैं। 'प्रति नायक' कहानी संग्रह, 'दस द्वारे का पिंजरा' उपन्यास और 'स्त्रीत्व का मानचित्र', 'मन माँजने की जरूरत है', 'पानी जो पत्थर पीता है' आदि विमर्श हैं। अनामिकाजी अनेक राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी हैं।

उनकी रचनाओँ मे यथास्थिति के चित्रण के साथ-साथ जन-चेतना का स्वर भी सुनाई पड़ता हैं।

यहा संकलित कविता 'बाज़ लोग' में कवयित्री ने उन सामान्य लोगों को बाजीगर कहा है जो समाज में हर महत्वपूर्ण चीजों का निर्माण करते हैं, सुंदर घर बनाते हैं, सड़कें, पुल, गगनचुंबी इमारतें और बाँधों का निर्माण करते हैं। वे बेहद गरीब और कठोर परिश्रम करनेवाले मज़दूर होते हैं। इसलिए समाज में उन्हें कोई महत्व नहीं दिया जाता है। किन्तु यह उन्हीं कठोर परिश्रम करनेवाले लोगों के परिश्रम का परिणाम है कि धरती पर अभी भीं आग, पानी और अन्न सब को उपलब्ध हैं। ये मजदूर अपने बेड़ौल और खुरदरे हाथों से दुनिया के हर चमत्कार का सृजन करते हैं।

बाज़ लोग जिनका कोई नहीं होता,
और जो कोई नहीं होते,
कहीं के नहीं होते।
झुण्ड बनाकर बैठ जाते हैं कभी-कभी
बुझते अलावों के चारों तरफ।
फिर अपनी बेडोल खुरदरी अश्वस्त
हथेलियां पसार कर,
वे सिर्फ आग नहीं तापते,
आग को देते हैं आशीष
कि आग जिए
जहाँ भी बची है, वह जीती रहे
और खूब जिए।
बाज़ लोग जिनका कोई नहीं होता
और जो कोई नहीं होते,
कहीं के नहीं होते

झुण्ड बनाकर चलाते हैं फावड़े
और देखते – देखते उनके
ऊबड़-खाबड़ पैरो तक
धरती की गहराइयों से
एकदम उमड़ आते हैं
पानी के सोते।
बाज़ लोग सारी बाजियाँ हार कर भी
होत हैं अलमस्त बाजीगर!!

शब्दार्थ-टिप्पणी

अलाव तापने की आग **बेडौल** भद्दा, **खुरदरी** जो चिकना न हो

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित दिए गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) बाज़ लोग झुण्ड बनाकर किसके पास बैठते हैं ?

(क) पानी (ख) अलाव (ग) मिट्टी के ढग (घ) पत्थर

(2) बाज़ लोग किसे आशिष देते हैं ?

(क) जलको (ख) दूधको (ग) आगको (घ) बच्चोंको

(3) बाज़ लोग फावड़ा कैसे चलाते हैं ?

(क) अकेले (ख) झुंडमें (ग) धीरे-धीरे (घ) रो-रोकर

(4) बाज़ लोग के उबड़-खाबड़ पैंरों तक धरती की गहराइयों से क्या उमड़ आते हैं ?

(क) पानी का सोते (ख) तेल के सोते (ग) दूध के सोते (घ) बारिश के सोते

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) कवयित्री किन्हें बाज़ लोग कहती है ?

(2) बाज़ लोग किसको आशिष देते हैं ?

(3) सारी बाजियाँ हाकर बाज़ लोग कैसे रहते हैं ?

(4) बाज़ लोग झुण्ड बनाकर कहाँ बैठते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) प्रस्तुत कविता में किस समाज का वर्णन किया गया है ?

(2) 'जहाँ भी बची है, वह जीती रहे' से क्या तात्पर्य है ?

(3) पानी के सोते कहाँ से निकलते हैं ? कैसे ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) 'बाज़ लोग कहीं के नहीं होते' यह कहने के पीछे कवयित्री का आशय क्या है ?

(2) सारी बाजियाँ हारकर भी बाज़ लोग अलमस्त क्यों कहलाते हैं ?

* **आशय स्पष्ट कीजिए :**

(2) 'बाज़ लोग सारी बाजियाँ हारकर भी होते हैं अलमस्त बाज़ीगर'

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी -प्रवृत्ति

- 'खुरदरी हथेलियाँ' कविता संग्रह प्राप्त करके पढ़ें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- फूलचंद गुप्ता की कविता 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' पढ़कर छात्रों को सुनाएँ।

●